

उपसर्ग- उप + सर्ग पास जुड़मा / सुक्टि कुरमा वे शक्दीया जी िम्सी मुलकाष्य के प्रारम्भ में जुड़कर उसके अर्थ को परिवातिल कर देते हैं, उपमर्ग कुहमोत् हैं-जैसे- 'हार' शब्द का अर्थ होता है-'प्राजय। गरे का आभूयण जब हार आष्ट्र के साथ अलग-अलग उपसर्गी का प्रयोग किया जाता है तो अर्थ भी अलग होता है-



र्मिन वि + हार = विहार > झुमना. अम् +हार = अहार > मारना, उप+हार = उपहार = स्नीगल. वि+अव १६१ए = व्यवहार = आचरण प्र+हार = प्रहार = चोट करना आ १६१ए = आहार = भोजन उत्+हार = उद्घार = मोक्ष/मुक्ति गरि+हार = गरिहार = त्यागना/तिरस्कार



```
उपसर्ग की भीन विशेषलाएँ:-

(1) द्राव्य के अर्थ में नई विशेषला भाना-
 जैसे- प्र+अल = प्रवल,
                           अनु +शासन = अनुशासन
       प्र+योग = प्रयोग,
                           स् +कर्म = स्वाम
```



(2) शाल्प के अर्थ को उसर देना:-

अ +सत्य = असत्य

अप्+यश = अपयश

अप +कीर्ति = अपकीर्ति,

उर+कार्ण = अकार्ण



(3) शाब्द के अर्थ में ज्यादा परिवर्तन न करके उससे मिलाने-जुलले अर्थ का बोध कुराना-जैसे- वि+ शुद्ध = विशुद्ध परि + क्रमण = परिक्रमण परि + अम्मा = परिभ्रमण



उपसर्ग के भेद :-(1) > तत्सम । संस्कृत भाषा के उपस्मी (2) > तद्भव / हिन्दी भाषा के उपसर्ग (3) > विदेशाज | विपेशी भाषा के उपसर्ग



```
प्रस्कृत भाषा के उपसर्गः । आईस (22)
→ ८→ अ= अलि, अधि, अनु, अप, अपि, अभि, उन्नि, अन
```



- 🛈 उमित अधिक 🔊 अत्यैत, अत्याप्य, अत्यावश्यक, अत्याधिक
- 🕝 अधि प्रधान/श्रेष्ठ/उपर⇒ अध्यक्ष, अध्ययन, अधिकार, अधित्यका
- 3 अनु मिट्टे सिटायक > अनुमान अन्वय अन्वेषण अन्वेषक, अन्विक्षक
- अप वुरा | विपरीत > अपयश, अपकार, अपकीति, अपवाद, अपकार
- S अपि भी ⇒ अपितु, अपिधान, अपिहित
- अभि अर्/एए > अभिमान, मभ्यास, झभ्यस्त, झभिधारणा.



- अप अरा/विपरीए ⇒ अवमानना, अवधारणा, अवकारा, अवहेलना
- 🗿 उमा एक 🔊 आमरण आभरण आकेल, आजन्म आणादमस्त्रक
- 9 प्र- पहल न प्रहार, प्रयोजना, प्रमाण, प्रकार, प्रयोग, प्रधान
- 10 प्रति हर/प्रत्येक > प्रतिक्षण, प्रत्येक, प्रतिदेन, प्रत्याक्रा
- 10 परा विपरीस / उल्ला > पराजय पराक्रम, पराभव पराकाखा
- 12 परि यारों ओर परिक्रमा, परिक्रमण, परिधान, परियोजना, पर्यवसान